

Padma Shri



DR. MADHURI BARTHWAL

Dr. Madhuri Barthwal is a retired Music Composer and Music Director of All India Radio, Najibabad. She is widely recognized for the preservation and promotion of folk music and the culture of Uttarakhand.

2. Born on 10th June, 1950, Dr. Barthwal received her Bachelor's degree in Arts with music as one of the subjects, from Agra University. She did her master's degree in Hindi from Rohilkhand University. She has also received a degree in music from Prayag Sangeet Samiti, Allahabad and did her Ph.D. from Hemwati Nandan Bahuguna University.

3. Dr. Barthwal is an accomplished author, having published two books, based on the folk music and tales of Uttarakhand. Her first book (also her Ph.D. subject) is "Garhwali Lok Geeton Mein Raag Raaginiyaan" while the other is "Garhwal Ki Lok Gaathayein Aur Muhavre." She took the opportunity of being homebound during the pandemic by furthering her research on the folk music of Uttarakhand and has prepared another five books for publication. The books are centered around hundreds of folk songs and folktales and also include the musical notations of folk songs.

4. Dr. Barthwal has been noted as the first female Garhwali Music teacher in the Government Girls Inter College, Lansdowne from 1969-1979. This was the time when music and dance were not considered ideal for girls. By becoming the first Garhwali female music teacher, she became a source of inspiration for many women in Uttarakhand who wanted to pursue a career in the field of music, as she led by example.

5. In 1979, Dr. Barthwal was selected for the very vaunted, single post of Music Composer at Akashwani Najibabad, for which both men and women applied at All India Level. She thus became India's first-ever female Music Composer at Akashwani, All India Radio. She conscientiously served at All India Radio for 31 years, from 1979 to 2010. She had also directed, produced and written many serials, skits & features, one of which was "Dharohar" which preserved folk and heritage of Uttarakhand and Rohilkhand. Since then, she had become a mentor and guide to thousands of upcoming artists.

6. Post her retirement, Dr. Barthwal provides training to both children and adults on the folk music of Uttarakhand, free of cost. She empowers housewives by training them in the art of Garhwali folk songs and dances and once again, to refute the orthodox, she trains women in playing the folk instrument, Dhol-Damau. The Dhol-Damau was hitherto considered a male dominion, performed only by males. With women performing it onstage, in state and national arenas, she once again nudges society into positive and forward-thinking. She also guides anyone researching the folk music of Uttarakhand, gratis.

7. Dr. Barthwal has been the recipient of numerous awards and honours. For her contribution to preserve the culture of Uttarakhand, she has been conferred with the prestigious state-level awards "Uttarakhand Ratna" in the year 2014; "Uttarakhand Bhushan" in the year 2018; and "Mohan Upreti Loksanskriti Kala Samman" in the year 2020. The Government of India conferred her the "Naari Shakti Award" in the year 2018.

पद्म श्री



डॉ. माधुरी बड़थवाल

डॉ. माधुरी बड़थवाल आकाशवाणी, नजीबाबाद की एक सेवानिवृत्त संगीतकार और संगीत निर्देशक हैं। उत्तराखंड के लोक संगीत और संस्कृति के संरक्षण और प्रचार के लिए ये काफी प्रसिद्ध हैं।

2. 10 जून, 1950 को जन्मी, डॉ. बड़थवाल ने आगरा विश्वविद्यालय से कला में स्नातक की डिग्री हासिल की जिसमें उनका एक विषय संगीत था। उन्होंने रोहिलखंड विश्वविद्यालय से हिंदी में मास्टर डिग्री प्राप्त की। उन्होंने प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद से संगीत में डिग्री भी प्राप्त की और हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की।

3. डॉ. बड़थवाल एक कुशल लेखिका हैं, जिनकी लोक संगीत और उत्तराखंड की कहानियों पर आधारित दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। उनकी पहली पुस्तक (उनकी पीएचडी का विषय भी) "गढ़वाली लोक गीतों में राग रागिनियां" है, जबकि दूसरी "गढ़वाल की लोक गाथाएं और मुहावरे" है। उन्होंने महामारी के दौरान घर में सीमित रहने का लाभ उठाते हुए उत्तराखंड के लोक संगीत पर अपने शोध को आगे बढ़ाया और प्रकाशन के लिए पांच और किताबें तैयार कीं। ये किताबें सैकड़ों लोकगीतों और लोककथाओं पर केंद्रित हैं और इसमें लोकगीतों के म्यूजिकल नोटेशन भी शामिल हैं।

4. डॉ. बड़थवाल को 1969–1979 तक शासकीय बालिका इंटर कॉलेज, लैंसडाउन में पहली महिला गढ़वाली संगीत शिक्षिका के तौर पर ख्याति मिली। यह वह समय था जब लड़कियों के लिए संगीत और नृत्य को अच्छा नहीं माना जाता था। पहली गढ़वाली महिला संगीत शिक्षिका बनकर वह उत्तराखंड की कई महिलाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बन गई, जो संगीत के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाना चाहती थीं, क्योंकि उन्होंने अपना उदाहरण रखते हुए राह दिखाई।

5. 1979 में, डॉ. बड़थवाल को आकाशवाणी नजीबाबाद में संगीतकार के एक पद के लिए चुना गया था, जिसके लिए पुरुषों और महिलाओं दोनों ने अखिल भारतीय स्तर पर आवेदन किया था। इस प्रकार वे आकाशवाणी, ऑल इंडिया रेडियो में भारत की पहली महिला संगीतकार बनीं। उन्होंने 1979 से 2010 तक 31 वर्षों तक आकाशवाणी में कर्तव्यनिष्ठा से सेवा की। उन्होंने कई धारावाहिकों, नाटकों फीचर का निर्देशन, निर्माण और लेखन भी किया था, जिनमें से एक "धरोहर" था, जिसने उत्तराखंड और रोहिलखंड के लोक संगीत और विरासत को संरक्षित किया। तब से, वे हजारों उभरते कलाकारों के लिए एक सलाहकार और मार्गदर्शक बन गई थी।

6. अपनी सेवानिवृत्ति के बाद, डॉ. बड़थवाल बच्चों और वयस्कों दोनों को उत्तराखंड के लोक संगीत में निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। वह गृहिणियों को गढ़वाली लोकगीतों और नृत्यों की कला में प्रशिक्षित करके उन्हें सशक्त बनाती हैं और एक बार फिर से, रूढ़िवाद का विरोध करने के लिए, वह महिलाओं को लोकवाद्य ढोल-डमाऊ बजाने का प्रशिक्षण देती हैं। अब तक ऐसा माना जाता था कि ढोल-डमाऊ सिर्फ पुरुष बजा सकते हैं और इसमें पुरुषों का प्रभुत्व था। राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं द्वारा इसे मंच पर प्रस्तुत करने के साथ, उन्होंने एक बार फिर से समाज को सकारात्मक और आगे की सोच के लिए प्रेरित किया। वे उत्तराखंड के लोक संगीत पर शोध करने वाले किसी भी व्यक्ति का मुफ्त में मार्गदर्शन भी करती हैं।

7. डॉ. बड़थवाल को कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उत्तराखंड की संस्कृति को संरक्षित करने में उनके योगदान के लिए उन्हें वर्ष 2014 में प्रतिष्ठित राज्यस्तरीय पुरस्कार "उत्तराखंड रत्न"; वर्ष 2018 में उत्तराखंड भूषण और वर्ष 2020 में "मोहन उप्रेती लोकसंस्कृति कला सम्मान" से सम्मानित किया गया है। 2018 में भारत सरकार ने उन्हें "नारी शक्ति पुरस्कार" से सम्मानित किया।